

वीर बाल दविस

हाल ही में, भारत के प्रधान मंत्री ने घोषणा की है कि **26 दसिंबर** को अंतमि सखि गुरु, गुरु गोबदि सहि के चार पुत्रों "साहबिजादे" के साहस को श्रद्धांजलि देने के लिये "**वीर बाल दविस**" के रूप में चहिनति कयि जाएगा।

- इस तारीख को चुना गया है क्योंकि इस दिन को **साहबिजादा जोरावर सहि और फतेह सहि** के शहादत दविस के रूप में मनाया जाता था, जो मुगल सेना द्वारा सरहदि (पंजाब) में छह और नौ साल की उम्र में मारे गए थे।

प्रमुख बडि

■ साहबिजादा जोरावर सहि और फतेह सहि के बारे में:

- साहबिजादा जोरावर सहि और साहबिजादा फतेह सहि सखि धर्म के सबसे सम्मानित शहीदों में से हैं।
- मुगल सैनिकों ने सम्राट औरंगजेब (1704) के आदेश पर आनंदपुर साहबि को घेर लिया।
- गुरु गोबदि सहि के दो पुत्रों को पकड़ लिया गया।
- मुसलमान बनने पर उन्हें न मारने की पेशकश की गई थी।
- उन दोनों ने इनकार कर दिया और इसलिये उन्हें मौत की सजा दी गई और उन्हें जदि ईंटों से दीवार में चुनवा दिया गया।
- इन दोनों शहीदों ने धर्म के महान सद्दिधांतों से वचिलति होने के बजाय मृत्यु को प्राथमिकता दी।

■ गुरु गोबदि सहि:

- दस सखि गुरुओं में से अंतमि गुरु गोबदि सहि का जन्म 22 दसिंबर, 1666 को पटना, बहार में हुआ था।
 - उनकी जयंती **नानकशाही कैलेंडर** पर आधारित है।
- गुरु गोबदि सहि अपने पिता 'गुरु तेग बहादुर' यानी नौवें सखि गुरु की मृत्यु के बाद 9 वर्ष की आयु में 10वें सखि गुरु बने।
- वर्ष 1708 में उनकी हत्या कर दी गई थी।

■ योगदान:

◦ धार्मिक:

- उन्हें सखि धर्म में उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिये जाना जाता है, जिसमें बालों को ढंकने के लिये पगड़ी भी शामिल है।
- उन्होंने खालसा या पाँच 'क' के सद्दिधांत की भी स्थापना की।
 - पाँच 'क' केश (बनि कटे बाल), कंधा (लकड़ी की कंधी), कारा (लोहे या स्टील का ब्रेसलेट), कृपाण (डैगर) और कचेरा (छोटी जाँघिया) हैं।
 - ये आस्था के पाँच प्रतीक हैं जिन्हें एक खालसा को हमेशा धारण करना चाहिये।
- उन्होंने खालसा योद्धाओं के पालन करने हेतु कई अन्य नियम भी निर्धारित किये, जैसे- तंबाकू, शराब, हलाल मांस से परहेज आदि। खालसा योद्धा नरिदोष लोगों को उत्पीड़न से बचाने के लिये भी कर्तव्यनष्ठि थे।
- उन्होंने अपने बाद गुरु ग्रंथ साहबि (खालसा और सखिों की धार्मिक पुस्तक) को दोनों समुदायों का अगला गुरु घोषित किया।

◦ सैन्य:

- उन्होंने वर्ष 1705 में मुक्तसर की लड़ाई में मुगलों के खिलाफ युद्ध किया।
- आनंदपुर (1704) के युद्ध में गुरु गोबदि सहि ने अपनी माँ और दो नाबालगि बेटों को खो दिया, जिन्हें मार डाला गया था। उनका बड़ा बेटा भी युद्ध में मारा गया।

◦ साहित्यिक:

- उनके साहित्यिक योगदानों में जाप साहबि, बेती चौपाई, अमृत सवाई आदि शामिल हैं।
- उन्होंने 'ज़फरनामा' भी लिखा जो मुगल सम्राट औरंगजेब को एक पत्र था।